The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 12 | December 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

विसंगतियों और अंतर्विरोध का तीखा स्वर 'आवां'

डॉ0 श्रीमती वैशाली नाईक
एसोसिएट प्रोफेसर
भारतीय भाषा विभाग
धेंपे महाविद्यालय कला व विज्ञान, मिरामार- पणजी गोवा।

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
विसंगतियाँ, सामाजिक परिवर्तन, शोषण, जीवनमूल्य

ABSTRACT

उपभोक्तवाद, अवसरवाद, विसंगतिवाद और भौतिकवाद के इस दौर में बदलते जीवनमूल्यों, मानवीय रिश्तों, शोषण और शोषक प्रवृत्तियों को चित्रित करते चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में प्रतिरोध के तीखे स्वर सुनायी देते है। चित्रा मुद्गल आधुनिक हिन्दी साहित्य का जानामाना हस्ताक्षर है। चित्राजी ने साहित्य के माध्यम से सामान्य व्यक्ति से लेकर समाज के उच्चवर्गीय लोगों की समस्याओं का चित्रण अत्यंत प्रमाणिकता के साथ किया है। अपने जीवनानुभवों के आधार पर चित्राजी ने 'आवां' उपन्यास के माध्यम से स्त्री जीवन की त्रासदियों को बखूबी उकेरा है। यह उपन्यास स्त्री विमर्श के महान आख्यान के रूप में जाना जाता है। स्त्री विमर्श के साथ इस उपन्यास में आधुनिक जीवन की विसंगतियों और विषम स्थितियों को दलित विमर्श, कामगार विमर्श माध्यम से चित्रित किया गया है।

विषय प्रवेश

आवां का अर्थ है-मिट्टी के बर्तन पकाने का भट्ठा। जिसप्रकार आवां में मिट्टी के बर्तन डालते है तो, कुछ तो पक्के हो जाते है, कुछ टूट जाते है। आधुनिक जीवन भी ऐसा आवां है जहाँ टटुते- बिखरते जीवनानुभवों का चित्रण मिलता हैं। इस उपन्यास में प्रमुख विषय है एक तरुणी युवती नमिता का जीवन संघर्ष।

पारिवारिक संघर्ष, शोषण और मूल्यहीनता-

नमिता एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी लड़की है। नमिता पाण्डे के पिता देवीशंकर पांडे 'कामगार आघाडी के महासचिव है। मजदूरों के प्रदर्शन के दौरान उन्हें कोई ईर्ष्यावश पीठ में छुरा भोंक देता है। वे घायल हो जाते हैं, अपाहिज की जिन्दगी गुजारने लगते है, बोल नहीं पाते, लिखवाकर कहते हैं। नमिता की पढ़ाई यहीं पर अवरूद्ध हो जाती है। वह पिता की सेवा में लगी रहती है। माँ को समय नहीं मिलता और वह पिता में रुचि भी नहीं लेती। नमिता के सिर पर घर खर्चा भी आ गया है। भाई बहन की पढ़ाई की जिम्मेदारी भी उसे ही उठानी पड़ती है, इसलिए पारिवार का बोझा ढोने के लिए कई तरह के काम करने शुरू भी किये जैसे, ट्यूशन के साथ, साडी में फॉल लगाना और पापड़ बेलना भी। नमिता ने मीठीबाई कॉलेज से बी.ए. पार्ट टू किया था, शार्टहैंड और टाइपिंग का कोर्स भी पूरा किया था। घर की परिस्थिति के चलते वह अपने पिता के स्थान पर अण्णा साहब की कृपा से मात्र डेढ हजार रूपये वेतन की नौकरी करती है। लेकिन वही अन्ना सहाब नमिता के साथ अश्लील हरकते करने पर उतारू हो जाते है, इसलिए नमिता तीन महीने के बाद ही नौकरी छोड़ देती है। बेकारी के दिनों में ही नमिता का मैडम वासवानी के परिचय हो जाता है। नमिता उनके व्यव्हार से प्रभावित होकर उनकी तरफ खीचती चली जाती है। मैडम वासवानी नमिता की बाबा ज्वेलर्स में साढ़े तीन हजार रुपये माहवार की नौकरी पक्की करवा देती है। मैडम की इस मेहरबानी से वह उत्साहित तो हो जाती है लेकिन मन में आशंका भी है कि क्या वह उस पंचासितारा होटल में अपने-आपको फिट कर पायेगी? मैडम वासवानी नमिता की सालगिराह भी धूमधाम से मनाती है, ढेर सारे कीमती उपहार भी देती है। मैडम वासवानी की मुनहार पर वह मॉडलिंग की दुनिया में भी कदम रखती है। संजय कनोई वासवानी का प्रमुख ग्राहक है। यही पर नमिता और संजय की मुलाकात होती है। संजय विवाहित है लेकिन उसकी कोई संतान नहीं है। वह पत्नी से असंतुष्ट रहता है। यहाँ नमिता का सिध्दार्थ फोटोग्राफर से भी सामना होता है। वह चाहता है कि नमिता उसके साथ काम करें, लेकिन बदले वह नमिता से शारीरिक सुख भी कामना करता है। नमिता उसके मिज़ाज से भयभीत है। नमिता संजय को ही अपना संरक्षक मानती है। दोनों होटल में मिलते है। दोनों एक दूसरे को चाहने लगते हैं। नमिता हैदराबाद में आभुषण डिजाइनिंग का प्रशिक्षण लेती है। यहाँ आकर उसे पत्ता चलता है कि वह गर्भवती है। संजय उससे शादी भी नहीं करना चाहता और न गर्भपात करवाने के लिए तैयार होता है और नमिता रखेल बनकर नहीं रहना चाहती। इसी दौरान पवार उसे अन्ना साहब के हत्या की खबर सुनाता है। इस गहरे सदमें से उसका गर्भपात हो जाता है। संजय इस खबर ये बौखला जाता है- "जानती हो बाप बनने के लिए मैंने तुम्हारे ऊपर कितना खर्च किया?.....मैं रंडियों से बाप नहीं बनना चाहता था, जिनके लिए बच्चा पैदा करना महज सौदा-भर हो और जो अनेकों से सौदा कर चुकीं हों – मुझे नहीं गँवारा थी ऐसी किराए की कोख! मुझे सिर्फ उस लड़की से औलाद चाहिए थी जो पेशेवर न हो....पवित्र हो, जो मुझ पर प्रेम कर सके। सिर्फ मेरे लिए माँ बने।.....मैं तुमसे शादी करूँ न करूँ....मुझे बाप बनाकर तुम जीवन भर ऐशोआराम में रह सकती थी।[1] संजय

की असलियत सामने आने पर नमिता संजय तथा उसकी स्मृतियों को छोड़कर किशोरीबाई के पास सुनन्दा की लड़की की परवरिश कर जीवन बीताना तय करती है। यहाँ नमिता के पारिवारिक संघर्ष को रेखांकित किया गया है। अपने परिवार के लिए कड़ी मेहनत करती है परन्तु उसके परिवार में एक बात को हमेशा कमी रही है और वह है पारिवारिक सौहार्द। आर्थिक तंगी तो आती-जाती स्थिति है। परिवार में आपसी सौहार्द की कमी हो तो यह स्थिति असहनीय हो उठती है। नमिता को माँ की जली-कटी हर वक्त सुनती पड़ती है। इसी उपन्यास में नमिता की सहेली स्मिता के घर में भी पारिवारिक सम्बन्ध बड़े जटिल बने हुए हैं। वहाँ नमिता की माँ की जगह मानो स्मिता के पिता ने ली है। यह 'मटकाकिंग' पिता अपनी पुत्री से देह सम्बन्ध रखने से नहीं हिचकता, जिसके कारण स्मिता की बहन पिता के साथ घर में अकेले रहने से घबराती है और अन्ततः मानसिक रोग की शिकार हो जाती है। इसी कारण स्मिता अपने शराबी पिता को स्वयं धक्का देकर सीढ़ियों से गिरा देती है जिसमें उसकी मौत हो जाती है। इसी उपन्यास की गौतमी को सौतेला भाई अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध रखने के लिए मजबूर करता है। परिणामतः वह आत्महत्या का प्रयास करती है।

श्रमिक आंदोलन और राजनीति- श्रमिकों के जीवन और श्रमिक राजनीति के ढेर सारे उजले-काले कारनामों का चित्रण आवां में फैले हुए है, जिसकी ज़मीन भी मुंबई से लेकर हैदराबाद तक फैल गई है। उसमें दलित जीवन और दलित-विमर्श के भी कई कथानक अनायास ही आ गए हैं। 'आवां' का बीज चाहे मुंबई ने रोपा, लेकिन खाद-पानी उसे हैदराबाद से मिला और श्रमिकों के शहर कोलकाता में बैठकर वह लिखा गया तो दिल्ली ने आधार कैंप का काम किया। इस रूप में यह लगभग पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला हिन्दी उपन्यास है। सही अर्थों में एक बड़ा उपन्यास, जिसमें लेखिका की अनुभव-संपदा काम आई है। इस उपन्यास में प्रमुखता से दो वर्ग उभरकर आते है। एक मजदूरों, श्रमिकों और ट्रेड युनियन के कार्यकत्ताओं और उनके नेता और दूसरा वर्ग है उद्योगपति और बिल्डरों की शोषित दुनियाँ, धनवानों की शोषण प्रवृत्ति। इस उपन्यास में मुंबई की हे युनियनों और मजदूर संगठनों के जीवन संघर्ष को रेखांकित किया हैं। मुंबई के चर्चगेट से घाटकोपर, विक्रोली, चेम्बर, विलेपार्ले, कल्याण और पवई लेक तक कथा का विस्तार देखने को मिलता है। मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी नमिता 'कामगार आघाडी' के महासचिव देवीशंकर पाण्डेय की बेटी है। पिता को निष्क्रियता के बाद महानगरीय परिवेश में जीवन जीने का संघर्ष करती है। आवां में समाज की सभी स्थितियों का, परिवेश का वर्णन मिलता है। अपने जीवनानुभवों के माध्यम से कही 'जागरण संस्था' के रूप में तो कही 'कामगार आघाडी' के श्रमिक संगठन के रूप में। इस यथार्थ को लेखिकाने संगठन आंदोलन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आवां में नारी जागरण और विद्रोह, राजनीति का अवमूल्यन, सामाजिक सांस्कृतिक विघटन के साथ मुंबई के पूरे परिवेश को देख सकते हैं। उपन्याम में स्त्री विमर्श के अधिक मजदूरों, श्रमिकों के संघर्ष को गहराई के साथ व्यक्त किया है। शोषक और शोषित प्रवृत्ति अभी भी

समाज गंभीर समस्या बनी हुई है। चाहे वह नेता या मिल मालिको व्दारा हो या धनवानों के धन बल से। सामंती व्यवस्था की शोषित प्रवृत्ति अपनी जड़ आज भी मजबूती के साथ धँसी खड़ी है। उपन्यास में शोषण वृत्ति के कई प्रसंग देखने को मिलते है। 'कामगार आघाडी' तो श्रमिकों के आंदोलन का रूप हैं। कामगार आघाडी के साथ जागो री, श्रमजीवी, लोकशाही आदि अनेक श्रमिक संगठनों का चित्रण हुआ है। मजदूर युनियन विभिन्न रूपों में अपनी सत्ता कायम बनाम रखने के लिए किसप्रकार घिनौना खेल खेलती है, या युनियन के भीतर के राजनीति दॉवपेच, अवसरवादिता, निष्ठुरता इसका चित्रण प्रमाणिकता के साथ किया गया है। नेताओं के प्रयत्नों के बाद भी मजदूरों की दशा वैसी ही बनी रही है। आवां में चित्रित कामगार आघाडी संगठन अपने मजदूरों के लिए वेतन-भत्ता, बोनस, स्वास्थ्य सुविधा, बीमारी तथा अन्य कारणों के लिए मिल मालिको के हितों का संरक्षण करती है। जिसके लिए देवीशंकर पाण्डे जैसे नेता लोग अपना जीवन दाँव पर लगाते है। लेखिका एक ओर देवीशंकर पाण्डे जैसे नेताओं के माध्यम से निस्वार्थी लोगों का चित्रण किया है वही, अन्ना साहब, पवार, शिवहरे कामटेकर जैसे लोग की अवसरवादी प्रकृति को भी बखुबी चित्रित करती है। शिवहरे कामटेकर जैसे लोग दलितों, मजदूरों का मसीहा बनने की खातिर साजिश से गरीबों के झोपड़ो में आग लगवाते हैं। लेखिका ने वर्तमान समाज में लोग शोषण और श्रमिकों के अधिकारों के हनन की समस्या व्यापक रूप से प्रस्तुत की है। मुंबई जैसी महानगरी में ऐसी कई टेड्र युनियनें हैं, जो सरकार के खिलाफ, या कारखानों के मालिक के विरोध में महिनों तक स्ट्राईक चलाती रहती है। लेखिका इस महानगरी के औद्योगिक और व्यवसायिक समस्याओं से भरे परिवेश के साथ उनके नेताओं और पारस्पारिक कलह, मनमुटावों, अन्तर्विरोधों का चित्रण करती है। डॉ. राम विनय शर्मा के शब्दों में "आवां मजदूर संगठनो के घात-प्रतिघात, तानाशाही, अन्तर्विरोध एवं संगठन, नेताओं के चारित्रिक पतन, अवसरवादिता और दुर्दमनीय लालसाओं को संजीदगी से उधाडता है।"[2] दलितों के आवेश, आवेग, शोषण, उपेक्षा, उद्वेग का चित्रण पवार के माध्यम से किया है। यही पवार राजनीति का लाभ उठाने के लिए नमिता से शादी करने के लिए तैयार है लेकिन नमिता अपने आप को किसीका जरिया बनना नहीं चाहती। स्वयं को दलित घोषित करनेवाला पवार वैचारीक मनमुटाव के बावजुद भी अन्ना साहब के साथ इसलिए है क्योंकि अकेले पार्टी बनाना उसके लिए संभव नहीं।

अन्ना साहब जैसे नेता भी स्वयं को दलितों का मसीहा साबित करने में लगे है, अपने आप को श्रमिकों का दुःख बाँटनेवाला नेता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। लेकिन लोकप्रियता प्रेस, पुलिस की सहायता भी लेते हैं।

नारी संगठन - उपन्यास में लेखिका 'जागो री' नामक एक स्त्रियों के लिए संगठन भी है, जो कामगार आघाडी से संबंधीत है। जो वेश्याओं की समस्याओं के प्रति क्रियाशील है और जिसका संचालन विमला बेना करती है। देह विक्रय जैसे नरक से निकालकर अच्छे काम में लगाना ही इस संगठन का उद्देश्य है। अनीसा नामक वेश्या पर हुए

अत्याचार तथा उसके मौत के कारण बने कामगार आघाडी के सक्रिय सदस्य किरपु दुसाध का विरोध कर उसे पकडवाती भी है।

लेखिकाने ऐसी ही संस्था 'श्रमजीवी' की चर्चा भी की है, जो शाहबेन नामक एक महिला चलाती है। 'श्रमजीवा' गरीब बेरोजगार महिलाओं को रोजगार देने वाला ऐसा संगठन है, जहाँ दस रुपये सैकड़ा की दर से पापड़ बेलने की मजदूरी दी जाती है। जरूरतमंद स्त्रियाँ यहाँ नियमित रूप से काम करती हैं। इसकी संचालिका शाह बेन महात्मा गाँधी के साथ काम कर चुकी हैं और महात्मा गाँधी के आदेश पर उन्होंने मुम्बई में 'श्रमजीवा' का कार्य आरम्भ किया था। शाहबेन निराधारों का आधार बनती है, दूसरों के दुःख से व्यथित शाहबेन के कारण कई घरों में दो वक्त की रोटी मिलती है। देवीशंकर पांडे के बिस्तर पर लगने पर 'श्रमजीवा' में ही पापड़ बेलने का काम कर नमिता का परिवार जैसे-तैसे चल रहा था। संचालिका शाहबेन नमिता के प्रति सद्भावना रखती थी अतः उसने चाहे जब काम पर आने की सहूलियत दी थी। किसी सदस्य के घर में कोई दुर्घटना हो जाती तो 'श्रमजीवा' की बेलनहारियों से आधी दिहाड़ी चंदे के रूप में इकट्ठा कर वह राशि दुर्घटनाग्रस्त परिवार को दी जाती थी। कोई विरोध करता तो शाहवेन उसे दूसरे दिन से काम पर आने से मना कर देती है। लेकिन जब वह यूरोप यात्रा के लिए निकलती है तब सुमित्रा बेन को जिम्मेदारी सौंपती है, जो उन बेलनहारियों से मुफ्त श्रम करवाती है, जिसकी शिकायत वे बेलनहारियाँ शाहबेन से करती है। शाहबेन में एक अनुशासनभरी कठोरता भी है जिसके कारण उनके कार्य में निस्वार्थ प्रवृति दिखायी देती है।

अवसरवादिता- उपन्यास में चित्रित पवार, शिवहरे तथा खुद कामगारों के मसीहा बनने की कोशीश करनेवाले अन्ना साहब अवसरवादी नेता है। नमिता के पिता देवीशंकर पाण्डेयजी को वह कन्नमवार नगरवाला प्लैट रहने के देते है, लेकिन आपकी लोकप्रियता के वशीभूत अन्ना साहब 'इंडीयन इस्प्रेस' के साक्षात्कार मे यह जाहिर करते है कि, कामगार आघाडी के सहयोगी देवीशंकर पाण्डेय के कार्यों के कारण उनकी सहायता हेतु से एक प्लैट अनुदान में दिया है। देवीशंकर पाण्डेय की दीर्घायु की कामना करते हुए समस्त मिल कामगार के साथ स्त्यनारायण की पूजा भी करते है, उनकी अर्थी को कंधा देते हैं तो अखवारवालो का फोकस उन पर होता है। कूटनीति में कुशल अन्ना साहब पवार को रोकने के लिए नमिता को आघाडी कार्यालय में नौकरी देते है, जिससे उसका ध्यान विचलित हो जाए। यहाँ तक नमिता के साथ अश्लील हरकत भी करते है, जिसके कारण नमिता नौकरी छोड देती है। अवसरवादियों में पवार भी कम नहीं। पवार में राजनीतिक महत्वकांक्षा भी है। आघाडी का नेता बनने की उसकी महत्वकांक्षा है, जिसके लिए वह अपने दलित होने को सबसे बड़ी उपलब्धि मानता है। नमिता से शादी करने दलित- सर्वणों में एकता का उपयोग राजनीति में करना चाहता है। अन्ना साहब के पीछे उनकी बुराई करता

है, उनका भांडा फोडने का प्रयत्न करता है। अन्ना साहब के सन्दर्भ में उसका मानना है कि "जड़ हुआ विचार मुक्ति के रास्ते नहीं तलाशता, जबकि खुल रहे जबरन किवाड़ों पर सांकल चढ़ा बैठता है।"[3]

इस व्यवहारिक महानगरी में महिला नेताएं भी अवसरवादी बन गयी है। सत्ता, लोकप्रियता के नशे में कोई भी दांव-पेच खेलने से पीछे नहीं हटती। देह व्यापार करनेवाली वेश्याओं का संगठन करनेवाली 'जागो री' संगठन की प्रमुख विमला बेन, अनीसा और पंढरी बाई का साथ देती है। यहां तक विधान सभा में वेश्याओं से संबंधीत प्रश्न उठाकर हंगामा खड़ा करती है, क्योंकि उसी क्षेत्र से उसे आनेवाले दिनों में चुनाव भी लड़ना है। विमला बेन और अन्ना साहब के आपसी संबंधों को भी लेखिका ने पवार के माध्यम से उधेडा है।

शिवहरे कामटेकर जैसे नेता अपने स्वार्थ के लिए मजदूर बस्तियों में आग भी लगाते है और हमदर्दी का नाटक भी करते है। "सत्ता में आए बिना मूल्यों की राजनीति पड़- पड़े भीतर से सुखे खोखले हो आए भोपाल के सादृश्य है? सत्ता से अर्थपद नहीं सूखे भोपले से वीणा बन सकती है? राजनीति का बिगुल नहीं । मूल्यों की राजनीति सत्ता में आने के बाद ही कारगर सिद्ध हो सकती है।"[4]

निष्कर्ष

बीसवीं सदी के अंतिम प्रहर में एक मज़दूर की बेटी के मोहभंग, पलायन और वापसी के माध्यम से उपभोक्तावादी वर्तमान समाज को कई स्तरों पर अनुसंधानित करता, निर्ममता से उधेड़ता, तहें खोलता, चित्रा मुदगल का सुविचारित उपन्यास 'आवां' अपनी तरल, गहरी संवेदनात्मक पकड़ और भेदी पड़ताल के अंतर्व्याप्त रचना-कौशल से जिन बिंदुओं पर पाठकों को आत्मालोचन के कटघरे में ले, जिस विवेक की माँग करता है- वह चुनौती झेलना आज की अनिर्वायता है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि 'आवां' की पृष्ठभूमि में ट्रेड यूनियनों की राजनीति, उनकी आपसी प्रतिद्वन्द्विता, अन्तर्विरोध और उसमें आपराधिक गिरोहों की ठेकेदारी है। इसमें दो राय नहीं है कि मजदूर संगठन मजदूरों के हित में कोई निर्णायक लड़ाई लड़ने में असमर्थ हैं। उनके नेता एक तरफ संगठन पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए दाँव-पेंच लगाते हैं, दूसरी तरफ निहित स्वार्थ के लिए संगठन की क्षमता का उपयोग करते हैं। प्रबन्धकों से अधिकाधिक सुविधाएँ हासिल करना उनका एकमात्र लक्ष्य रह गया है। इस उपन्यास में मजदूर नेता का चरित्र इससे अलग नहीं है।

संदर्भ सूची-

1. मुद्गल चित्रा, आवां, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 539
2. डॉ.पाटील कल्पना,चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर पृ.95

3. मुद्गल चित्रा, आवां, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 530
4. वही, पृ.413
5. वनजा के., चित्रा मुद्गलः एक मूल्यांकन, सामायिक बुक्स, नई दिल्ली, 2016
6. सं. शिरीष उर्मिला, चित्रा मुद्गलः सृजन के विविध आयाम(भाग प्रथम), अमन प्रकाशन, कानपुर, 2019
7. डॉ. थोरात गोरक्ष, चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 2009